

तुलसी माता की आरती: जय जय तुलसी माता

पद 1

जय जय तुलसी माता, मैया जय तुलसी माता।
सब जग की सुख दाता, सबकी वर माता॥

पद 2

सब योगों के ऊपर, सब रोगों के ऊपर,
रुज से रक्षा करके भव त्राता॥

पद 3

बटु पुत्री है श्यामा, सुर बल्ली है ग्राम्या,
विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे, सो नर तर जाता॥

पद 4

हरि के शीश विराजत, त्रिभुवन से हो वंदित,
पतित जनों की तारिणी, तुम हो विख्याता॥

पद 5

लेकर जन्म विजन में, आई दिव्य भवन में,
मानव लोक तुम्हीं से, सुख-संपत्ति पाता॥

पद 6

हरि को तुम अति प्यारी, श्याम वर्ण सुकुमारी,
प्रेम अजब है उनका, तुमसे कैसा नाता॥

अर्थ, स्रोत और दूसरी आरती-चालीसा: sanatanbodh.in/stotra/tulsi-aarti/